BA-I (H)
मैथिली
पेपर - I

□ प्रो० शैलजीत कुमार राम □
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar

गोविन्द गजनावली

Topic:- भक्ति आ शृंगार

महाकवि गोविन्ददास श्रेष्ठ कवि छथि। हिनक काव्यात्मक क्षमता मिथिलासँ बंगाल तकके प्रभावित कयलक। वस्तुतः ई महान कवि विद्यापतिक परम्पराकेँ आगू बढ़ौलन्हि। ई कवि विद्यापतिकेँ अपन काव्य-गुरु मानैत छथि -

"कविपति विद्यापति मतिमाने।
जाक गीत जग-चीत चोराओल गोविन्द-गोरि सरस-रस गाने।"

गोविन्ददास अपनाकेँ विद्यापतिसँ प्रभावित मानैत छथि, तेँ ने हुनक कीर्तन

कएलनि। किन्तु दुनूमे अन्तर अछि। विद्यापति लोक-जीवनक कवि छथि तँ गोविन्ददास भक्ति-जगतक। विद्यापतिक पद जीवनक विभिन्न पहलूकेँ छूबैत अछि। तँ गोविन्ददास पद नवधा-भक्तिकेँ महिमा मण्डित कएलक अछि।

गोविन्ददास सख्य भावक कवि छथि। किन्तु किछु गीत अछि जे शृंगार-भजन नहि मात्र भजन अछि। जाहिमे सख्यभाव नहि 'दास्य' भाव अछि।

ओना महाकवि "भजहु रे मन नन्द-नन्दन अभय चरणारविन्द।" पदमे अपन जीवनक उद्देश्य कृष्ण भक्ति मानैत छथि जाहि लेल नवधाक कोनो विधा हुनका मान्य छनि, किन्तु उक्त पदक सम्पूर्ण गीतमे ओ अपनाकेँ ईश्वरक दास मानैत अछि।

महाकवि गोविन्ददास रामकेँ परम रूप सच्चिदानन्द मानैत छथि, ओ हुनक

अलौकिक महिमाक गान करैत हुनका अपन हृदयमे अवधारित करैत छथि।

प्रीतिकें प्रथमक आकुलता पूर्वराग कहबैत अछि। प्रेममे आनंद अछि, आकुलता अछि। महाकवि गोविन्ददास राधा आ कृष्णक रूपहि स्थितिक वर्णन बहुत आलंकारिक शब्द संयोजनमे करैत छथि, जे अपूर्व अछि।

राधाकें हृदयमे आ समाजक भय छनि, जाहि कारणें कृष्णसँ भेंट नहि भऽ पबैत छनि। साप जकाँ छटपटाइत अछि। निन्द हेरा गेल छनि। करवटो बदल छथि कुमारि विचलित होइत अछि तँ करवटो अहीं छनिक कुरतामे अपनाकें बिसरि जाइत अछि। एतेक धरि जे राधाकें कृष्ण सर्प जकाँ कुहुकाइत छथिन, हुनक वंशीक स्वर विषवत् कुमारइत छनि। हुनक रुदन वर्णन करुण गेल अछि, जेना सर्पक वर्णन नायिकाक रहलहि जे नायिकाक पातिव्रत भंग

के रहलाह जेना सर्प प्राणके नष्ट क' दैत अछि। कहैत छथि —

"काजर-तिमिर-भरमे जनु तनु-कान्ति बिलसए
कुँज-कुटीर बाहि-निसान मधुर बिछउलिरस,
बाट अनेत कुटिल कुटीर सजनी,
कान्ह सेँ बरजु गुजड़ा।"

जखन राधाकेँ कृष्णक दर्शन होइत छनि, तखन राधा अपन सुधि-बुधि बिसरि जाइत छथि। हुनक अद्भुत प्रेमक वर्णन करैत गोविन्ददास कहैत छथि, लोकमे ई बात अछि जे कृष्ण ओ राधाक बीच अटूट प्रेम अछि। कवि कहैत छथि —

"ए किए सबप किए परिवाद।
गोविन्ददास न आँगब बिवाद।"

अर्थात् जे कथा लोकमे पसरल अछि ओकर तह तक गोविन्ददास नहि जाए चाहैत छथि, एही ठाम प्रश्न उठैत अछि जे कविकेँ दुविधा दुविधा किएक छनि। हमरा जनैत

भक्ति भाव कवि राधाकें कृष्णक अनुरागी रूपमे चित्रित छथि, एहमे किछु कहल जाइत छनि। श्रीकृष्ण ओ राधाकें रस ओ परकीयाक अपूर्व संयोग मानैत छथि जाहिमे हुनक भक्ति-भाव समाहित भ जाइत छनि।

राधा कृष्णक विषयमे हुनक नव-नव गुणक विषयमे सुनैत, जाहि कानसँ राधा ओ गुण सब सुनि रहलीहे। क

राधा कहैत छथि, जेना कोनो रसायन (दवाइ) कानक होइत अछि तँ कोनो आँखिक लेल, ताहिना प्रिय गप्प हुनक रसायन थिक, प्रत्यक्ष दर्शन थिक। प्रेम परिपूर्ति सम्भाषण हृदयक रसायन थिक आ कृष्ण स्पर्श हुनक सम्पूर्ण जीवनक रसायन थिक। एहना स्थितिमे राधाकें कुल-मर्यादा निकेमे जरैत ओहि दीप सन बुझाइत छनि जाहि पर प्रेमातुरी बिहाड़ि जोरसँ बहय लागल होअय।

ओहि काल भक्त गोविन्ददास

6

राधाक सखी लोकै कहइ छथि, ओ कहैत छथिन —

"गोविन्ददास जतन करए राखह लोचक जाल अगोर।"

गोविन्ददास प्रेमक दीपकें लाज रूपी सॉपनसँ बचबाक चेतावनी दैत छथि।

कृष्णक रूप वर्णन करैत आन सखीसँ कहैत छथिन — जे पहाड़मे गाय-चरबाक जगहमे आ वनमे घुमैत रहैत छथि, जे अपन पातर डाँड़ लचकबैत विचरण करैत रहैत छथि, जे मयूरक पाँखिक सुन्दर छत्रक। छिटकबैत रहैत छथि तकरा हे सखी आहाँ कोना चिन्हता लेलहुँ।

आब कृष्ण अपन प्रेमानुभूति अपन अनुरागिनीसँ सुनबैत छथि जे राधाक स्वच्छ शरीररूपी कमल जे अत्यन्त सुन्दर अछि, ओकरा निहारैत मोर मन गेल आ कुनक (राधा) मोह रूपी नागिन डँसि लेलक अछि। कृष्ण मदन रूपी महासागरमे छटपटा रहलाह किन्तु ओहिसँ

8. राधा-विरही राधाक प्रेममय रूपक वर्णन हेतु आलंकारिक वर्णन द्वारा संगमोत्तर करैत छथि कवि समुद्र-मन्थन जेना भौतिक आ ओहि समुद्र-मंथन सँ जे धन बहरायल, तहिना प्रेम आ प्रेममयी शरीरक विभिन्न उपादानसँ जेना कादुकेँ कामदेवक वर्णन कयलनि अछि आ कहैत छथि —

"अधर-सुधा प्रिय-प्रेम,
लभि छिपि बाहर नव-पट-चन्द।
प्रीति अनुभाव रत्न परिपूरल
गोविन्ददास रहु धन्द।"

अर्थात् प्रीतिक विभिन्न अनुभव रत्नकेँ परिपूरित करैत अछि जे स्वयं कविकेँ विस्मित करैत छनि।

Sanyal
13.04.20